Railways :

Panipat-Ambala Ph. I (Doubling)

Mathura-Gangapur City (Electrification)

Delhi-Mathura-Jhansi (Electrification)

Nagda-Ramganj Mandi (Doubling)

Gangapur City-Ratlam (Electrification)

Telecommunications :

Indo-UAE Sub-Marine Cable, Bombay.

हिंदी भाषा का प्रसार

1651. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :** क्या **विधि और न्याय** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि "क" और "ख" क्षेत्रों में राजभाषा अधिनियम की पूर्णतः अवहेलना करते हुए, रोमन लिपि के कम्प्यूटरों, टेलेक्स मशीनों और टेली-प्रिंटरों जैसे दर्जनों आधुनिक यंत्रों के आगमन और अनाधित प्रयोग के फल-स्वरूप हिन्दी के प्रसार का कार्य वर्षों पीछे पड़ गया है और जहां भी टेलेक्स मशीनें लगायी गई हैं वहां से एक भी तार हिन्दी में नहीं भेजा गया है ;

(ख) क्या यह भी सच है कि "क" क्षेत्रों में अंग्रेजी के टंकन यंत्रों आदि की तुलना में देवनागरी के टंकन यंत्रों, टंककों और आशुलिपिकों की संख्या नहीं के बराबर है जबकि उनकी संख्या 50:50 होनी चाहिए थी ; और

(ग) यदि हां, तो उसके क्या कारण हैं और हिंदी भाषा के प्रसार के लिए क्या नए कदम उठाए गये हैं ?

विधि और न्याय मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री हंसराज भारद्वाज) : (क) जी नहीं। इस मंत्रालय के पास, कम्प्यूटर, टेलेक्स मशीन आदि जैसे आधुनिक उपस्कर बहुत सीमित संख्या म हैं। इस मंत्रालय ने केवल पांच कम्प्यूटर और एक टेलेक्स मशीन है। इनमें से एक कम्प्यूटर द्वि-भाषिक है। यह ध्यान देने की बात है कि टेलेक्स मशीनें रोमन लिपि में ही उपलब्ध होती हैं।

जहां तक कि तारों के प्रेषण का प्रश्न है तो यह उल्लेखनीय है कि वे टेलेक्स मशीन से नहीं भेजे जाते हैं और इसलिए हिन्दी में भेजे जाने के लिए अपेक्षित तार हिन्दी में ही भेजे जाते हैं क्योंकि उसकी सुविधा डाकघरों में उपलब्ध है।

(ख) यह कहना ठीक नहीं है कि देवनागरी टाइप मशीनें या हिन्दी जानने वाले टंकक (अवर श्रेणी लिपिक) और हिन्दी आशुलिपिक लुप्त प्राय हो गई है। 31 दिसम्बर, 1987 को तथ्य विषयक विद्यमान सुसंगत स्थिति, जहां तक कि इस मंत्रालय का संबंध है, निम्न प्रकार है :–

टाइप मशीनें	अंग्रेजी	देवनागरी
	361	99
	कुल संख्या	हिन्दी जानने वाले
अवर श्रेणी लिपिक .	199	60
आशुलिपिक . .	135	55

प्रश्न में बताई गई यह व्यवस्था कि देव-नागरी टंककों और आशुलिपिकों की संख्या 50 प्रतिशत होनी चाहिए, कहीं भी अधिकथित नहीं है।

(ग) प्रश्न ही नहीं उठता।